तुरंत जारी करने के लिए

3 मई 2016

सिंहस्थ में पहली बार ऐतिहासिक पहल

भारत माता के लिए स्वच्छता क्रांति लाने कई धर्म प्रमुख एकजुट

उज्जैन, भारत - सिंहस्थ महाकुंभ 2016 एक ऐतिहासिक पहल का साक्षी बना। मंगलवार 3 मई को महाकुंभ के इतिहास में पहली बार विभिन्न धर्म प्रमुख 'सदभावना संकल्प' के माध्यम से भारत माता के लिए 'स्वच्छता क्रांति' लाने का आह्वान करने एकजुट हुए। इस संकल्प को पूरा करने के लिए धर्म प्रमुखों ने देश के नागरिकों से अपील की है कि एक साथ उठ खड़े हों ताकि भारत स्वच्छता का वैश्विक उदाहरण बन सके। इस उद्देश्य को पूरा करने लिए उन्होंने सदभावनापूर्वक कहा कि पर्यावरण अनुकूल शौचालय का उपयोग कर हमारी भूमि और नदियों को खुले में शौच से होने वाले प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए हमें वह हर वह कार्य करना चाहिए जो हम कर सकते हैं।

सर्वधर्म स्वच्छता संकल्प के अवसर पर दीप प्रज्जवलन करते हुए पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, सह-संस्थापक, ग्लोबल इंटफेथ वाश अलायंस और अध्यक्ष परमार्थ निकेतन ऋषिकेश ने कहा कि हम जैसे स्वप्न देखते हैं, दुनिया वैसी ही होती है, और अब नए स्वप्न देखने का समय आ गया है। भारत में साफ पेयजल, स्वच्छता और सफाई के अभाव में प्रतिदिन 1,200 बच्चों की मृत्यु हो जाती है। ये मृत्यु हमारी बुरी आदतों का परिणाम है। हम इस स्थिति को बदल सकते हैं। हम अपने रास्ते बदल कर दुनिया को बदल सकते हैं।

पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती, सह-संस्थापक, ग्लोबल इंटफेथ वाश अलायंस (जीवा) और अध्यक्ष परमार्थ निकेतन ऋषिकेश की प्रेरणा से ग्लोबल इंटफेथ वाश अलायंस (जीवा) द्वारा यूनिसेफ के तकनीकी सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम पांच धर्मों के प्रतिनिधि एक मंच पर थे।

भारत में करीब 60 करोड़ लोग शौचालय का उपयोग नहीं करते हैं। यह अनुमान है कि खराब स्वच्छता के कारण प्रत्येक 20 सेकण्ड में एक बच्चे की मृत्यु हो रही है। **अकेले मप्र में 67 फीसदी आबादी खुले में शौच जाती है।** ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह संख्या 80 प्रतिशत की उच्च दर पर है। इसके बाद भी, मप्र में उम्मीद की किरण नजर आती है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में इंदौर (उज्जैन का पड़ोसी शहर) के ग्रामीण क्षेत्र तथा सीहोर व नरसिंहपुर जिले के दो विकासखण्डों को खुले में शौच मुक्त बनाने की घोषणा की है। पिछले एक साल में करीब 10 लाख लोगों ने शौचालय सुविधा प्राप्त की है। शौचालय अब जन आंदोलन बनता जा रहा है।

सद्भावना संकल्प के अवसर पर जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंदजी महाराज जी ने जल के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। आपने कहा कि पानी सभी के जीवन की बुनियादी आवश्यकता है लेकिन अभी धरती पर केवल 0.75 प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है। इसलिए जल का संरक्षण करना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। प्रत्येक धर्म में पानी का किसी न किसी रूप में सम्मान किया जाता है। यह खूबसूरत क्षण है जब धर्म गुरू एक साथ यहां शिप्रा के तट पर सही दिशा में यात्रा के लिए एकत्रित हुए हैं।

प्रख्यात सुन्नी नेता, इमाम उमर इलियासी, अध्यक्ष, ऑल इंडिया इमाम आर्गनाइजेशन ने वादा किया कि वे हमारे घरों और समाज में स्वास्थ्य, स्वच्छता और सफाई के इस महत्वपूर्ण संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए देश भर के इमामों को एकजुट